INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

WWW.CASIRJ.COM
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

पंचपरगनिया सांस्कृतिक चेतना की अवधारणा

उमेश साव
वरीय शोधार्थी (पंचपरगनिया)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय , राँची (झारखण्ड)
ईमेल – umashsaw9@gmail.com

सांस्कृतिक चेतना की अवधारणा मानव समाज और उसकी सांस्कृतिक पहचान को समझने से जुड़ी होती है । वह अपनी और दुसरों की संस्कृति के प्रति जागरुक और समझ रखता है, साथ ही अपनी संस्कृति और अन्य संस्कृतियों के मूल्यों, उनके विश्वासों और प्रथाओं का सम्मान करता है । यह शब्द किसी की लोक मान्यता, उसके सम्मान और सहिष्णुता का वर्णन करता है । जो अपनी संस्कृति और उन संस्कृतियों के साथ अन्य संस्कृतियों को प्रदर्शित करता है, जो भले ही पर्यावरण का प्रतिनिधित्व नहीं करती ।

सांस्कृतिक चेतना वह स्थिति है, जिसमें कोई व्यक्ति या समाज अपनी संस्कृति, अपनी लोक परंपराओं का , अपनी भाषा, लोक कला, लोक साहित्य, रीति–रिवाज, लोक विश्वास और सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरुक होता है और उसका सम्मान करता है ।

डॉ. श्याम प्रमार जी के दृष्टय है – '' संस्कृति मनुष्य के उन व्यापारों तथा अभिव्यक्तियों का नाम है, जिनहें वह साध्य के रुप में महत्वपूर्ण मानता है । संस्कृति मानवीय जीवन अथवा जीवन क्रिया के उन क्षणों का समुदाय है जो स्वयं अपने में महत्वपूर्ण समझे जाते है । सांस्कृतिक जीवन हम उसे कहेंगे जिसमें हमारा संबंध अनुपयोगी किन्तु अर्थपूर्ण वास्तविकताओं से स्थापित होता है । मनुष्य केवल उपयोगिता की परिधि में जीवित नहीं रहता । उसमें कुछ ऐसी रुचियों भी पायी जाती है जो उपयोगिता के अतिक्रमण करती है, वह बौद्धिक जिज्ञासा तथा सौंनदर्य की भूख से पीड़ित होता है और इस प्रकार एक सांस्कृतिक प्राणी के रुप में जनम लेता है । /1

डॉ. दिनेश्वर प्रसाद के दृष्टय – '' संस्कृति '' वह शब्द है जो मनुष्य को संस्कार युक्त बना कर एक सामाजिक प्राणी के रुप में मान्यता प्रदान करती है । अगर मानव के पास संस्कृति नहीं है तो वह कंगाल है । अपने पूर्वजों से मिले ज्ञान और स्वतः अनुभव से ही कोई सुसंस्कृत होता है । सांस्कृतिक परिवेश ही मनुष्य को व्यक्तित्व निर्माण में सहयोग प्रदान करता है । '' मनुष्य संस्कृति–निर्माता प्राणी है ।'' यह परिभाषा उसके सम्बन्ध में प्रचलित कई परिभाषाओं से अधिक संगत है, क्यों कि संस्कृति उसकी निजी उपलब्धि है ।/ 2

संस्कृति का स्वरुप – संस्कृति का स्वरुप एक व्यापक अवधारणा है, जो किसी समाज के रीति–रिवाजों, उन्के मूल्यों, लक विश्वासों, कला, संस्कृति, साहित्य और जीवन के अन्य पहलुओं को समाहित करती है । यह एक समाज की पहचान होती है और उसकी विशिष्टता को दर्शाती है ।

संस्कृति के प्रमुख पहलू –

1.मान्यताएं और मूल्य 2. रीति–रिवाज और परंपराएँ 3. **कला और साहित्य** 4. **सामाजिकसंरचना** 5. **भाषा** 6. **भौतिक संस्कृति 7. ज्ञान और शिक्षा**

संस्कृति गतिशील होती है और समय के साथ बदलती रहती है । यह अन्य संस्कृतियों के साथ आदान–प्रदान और संपर्क के माध्यम से भी प्रभावित होती है । भारतीय संस्कृति, दुनिया की सबसे पुरानी और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है । पंचपरगनिया संस्कृति को लेकर एक कहवात आज भी प्रचलित है '' बारह मासे तेरह परब, पाँच परगना केर गरब ।'' यह दर्शाता है कि इसकी सांस्कृतिक विरासत कितनी सबल रही होगी । स्वभाविक है कि अन्य भारतीय संस्कृति के साथ आदान–प्रदान और संर्पक के माध्यम से ये भी प्रभावित हुई है । जिससे पंचपरगनिया संस्कृति भी अछुता ना रहा, जो कि पुरानी और समृद्ध संस्कृतियों में कला विज्ञान, संगीत, नृत्य, और मानव जीवन को बेहतरीन उपलब्धियों में शामिल रही है ।

पंचपरगनिया लोकमान्यताएँ, लोक परंपराएँ, रीति–रिवाज, कला, साहित्य, सामाजिक जीवन शैली उसकी संरचना, भाषा, भौतिक संस्कृति के साथ ज्ञान विज्ञान को परिभाषित करती है । जो कि अन्य भाषा संस्कृति की तरह यह गतिशील है और समय के साथ इसमे कई बदलाव अन्य संस्कृति के समकक्ष आ जाने से संस्कृतिक विकास बदलते परिवेश के साथ खान–पान, रहन सहन में भाषा संस्कृति में जुड़ जाते है, पर इसका मूल नहीं बदलता ।

डॉ. भुनेश्वर अनुज के दृष्टव्य है कि '' सांस्कृति आंतरिक तथा वाह्य जीवन की अभिव्यक्ति हाती है जिसके अन्तर्गत हमारे जीवन के भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक मूल्य आते है । वास्तव में हर समाज के मूल में नैतिक स्तर, धार्मिक विश्वास, संस्कार, सामाजिक नियम आदि होते है जिन्हें सामाजिक तथा धार्मिक मान्यता मिलती है ।

लोक समाज की संस्कृति लिखित नहीं बल्कि मानसिक धरोहर तथा विश्वास के रुप में होती है, जो लोक मानव को युगों से पीढ़ी से विरासत से प्राप्त होती रहती है । सभ्यता के विकास के कारण नागर लोग इस संस्कृति के प्रति उत्तरदायी बना रहता है । यही कारण है कि लोक संस्कृति में स्थायित्व बना रहता है ।/3

संस्कृति की परिभाषा –

" संस्कार से जुड़ी मानव कृति संस्कृति, जो मनुष्य के द्वारा अर्जित वह समस्त ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, नियम, रीतियाँ और क्षमताएँ हैं , जो वह समाज के सदस्य के रुप में प्राप्त करता है, उसे संस्कृति कहते है ।

संस्कृति को परिभाषा के घेरे में बाँधने का सर्वप्रथम प्रयत्न इंगलैड के मानवशास्त्री **ई. बी टाइलर** ने सन 1874 ई में किया था । उनके अनुसार – " संसकृति अथवा सभ्यता वह जटिल इकाई है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, शील, विधि, रूढ़ि और किसी भी उस क्षमता तथा अभ्यास (आदत) का समावेश रहता है ।/4

संस्कृति शब्द अपने आप में व्यापक है । यूँ कहें संस्कृति ' सागर में गागर' के समान है । ये मानवीय ज्ञान भंडार की पोटली है । इस ' पोटली ' के बिना मानव, मानव नहीं बल्कि पशुतुल्य है । मानव जन्म से लेकर मृत्यु तक जो कुछ भी व्यवहार करता, सीखता है वह संस्कृति है । संस्कृति मानव जीवन जीने की सर्वश्रेष्ठ करता है ।

यह एक गतिशील प्रक्रिया है जो पीढ़ी दर पीढ़ी सीखी जाती है, साझा की जाती है और समय के साथ बदलती रहती है । यह अवधारणा है जो मानव समाजो में पाए जाने वाले सामाजिक व्यवहार संस्थानो और मानदंडो के साथ–साथ इन समूहों मे व्यक्तियों के ज्ञान, विश्वास, कला, कानून रीति–रिवाज क्षमताओं, दृष्टिकोण और आदतों को शामिल करती है । किसी जातीय धार्मिक या सामाजिक समूह की प्रथागत मान्यताएँ, सामाजिक रुप और भौतिक लक्षण के साथ ही किसी स्थान या समय में लोगों द्वारा साझा की जाने वाली रोजमरा की जिंदगी की विशिष्ट विशेषताएँ या कह सकते है मनोरंजन या जीवन जीने के तौर तरीके इनमे निहित रहते है ।

संस्कृति की मुख्य विशेषता –

संस्कृति परम्पराओं से, विश्वास से , जीवन शैली से, आध्यात्मिक पक्ष से, भौतिक पक्ष से निरन्तर जुड़ी है । यह हमे जीवन का अर्थ, जीवन जीने का तरीका सिखाती है । मानव ही संस्कृति का निर्माता है साथ ही संस्कृति मानव को मानव बनाती है । संस्कृति का एक भौतिक तत्व है धार्मिक विश्वास और उसकी प्रतीकात्मक अभिवक्ति है।

डॉ. शान्ति खलखों ने संस्कृति की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है –

1 संस्कृति सीखा हुआ व्यवहार है 2. संस्कृति में संचालन का गुण होता है 3. आदर्श गुण है 4. आवश्यक्ता पूर्ति करने का गुण है 5. संस्कृति सामाजिक है 6. संस्कृति अधिवैयक्तिक तथा अधिसावयवी है

7. संस्कृति संगठित है 8. संस्कृति गतिशील होती है 9. संस्कृति में हस्तान्तरित होने का गुण है 10. संस्कृति मानव की उपज है 11. प्रत्येक समाज की संस्कृति में अनुकूलन का गुण है ।/5

संस्कृति में प्रेम दशेन –

संस्कृति में प्रेम का दर्शन यह एक व्यापक विषय है । जो विभिन्न संस्कृतियों में प्रेम की धारणा और अभिव्यक्ति को दर्शता है । यह संबंध प्रेम की अवधारणा जो व्यक्तिगत संबंधों, सामाजिक मूल्यों और आध्यात्मिक मान्यताओं को प्रभावित करती है, विभिन्न संस्कृतियों में अलग–अलग तरीके से समझी और व्यक्त की जाती रही है ।

भारतीय दर्शन में, प्रेम को सत्य, प्रेम और सौंदर्या के साथ जोड़ा जाता है । जो व्यक्तिगत पहचान से परे होता है और सार्वभौमिक आतम की पहचान तक विस्तृत होता हो वह अध्यात्म प्रेम कहलाता है । संस्कृत में जिस तरह से प्रेम के कई शब्द है '' प्रीति, स्नेह, अनुराग, और प्रेम जो प्रेम के विभिन्न पहलुओ को दर्शाते है वसे ही पंचपरगनिया में प्रेम के कई ऐसे शब्द है – सनेह, पिरित, पेरेम, दुलार, भगति, मित, मितान, फूल, सहिया, फूलिन, मिता, सेवा, रिझ, जिसमें पाँच परगना क्षेत्र के संस्कृतिक प्रेम के सार छिपे हुए है ।

'' दसो मासो दस दिनों अदरे राखीलें मांगो, अदरे राखीले,
आपन घरे छाईक मांगो.... परेर घरे दिले.....2
बेटी घरे बोलियों ना माँ बेटी गेलो चेईले ....2 /6

पंचपरगनिया लोकगीतों में पांच परगना संस्कृति की झलक पारिवारिक जीवन, सामाजिक जीवन, धार्मिक जीवन, सांस्कृतिक जीवन में प्रेम की प्रतिच्छाया देखने को मिलती है । पंचपरगनिया साहित्य के लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य लक जन जीवन से जुड़े रहे है । पंचपरगनिया लोकगीतो में परिवारिक जीवन की मधुरता , सामाजिक जीवन के प्रेम और माधुर्य को दर्शाया गया है, वही मध्यकालिन कवियों ने अपने भक्ति का सुंदर वर्णन देखने को मिलता है । जहाँ एक भक्त अपनी भक्ति में भगवान के अवलोक्ति रुप को पाता है । भक्ति प्रेम के अंतर्गत कृष्ण भक्ति, राम, दुर्गा, गणेश, शिव, मनसा, काली ऐसे कई देवी–देवताओ को बंदन करती है ।

संस्कृति में सौंदर्य बोध –

सौन्दर्य बोध – सौन्दर्य के प्रति आकर्षण होना स्वभाविक ही है । विश्व में जितने भी जीवधारी है वे सब सुन्दरता के लिए लालायित रहते है । यह कहना उचित ही है कि '' सुन्दर '' विशेषण प्रत्येक मानव में अलौकिक उल्लास को प्रस्फुटित कर देता है । जीव मात्र स्वयं को 'सुन्दर' बनाने का पूर्ण प्रयास करता है

और सौन्दर्य की उपलब्धि के लिए उसके मानस में सत्त ललक मचलती रती है । यह सौन्दर्य ही है जो इस संघर्ष परिपूर्ण विश्व में मानव को जीवित रख रहा है और उसे अभावों से परिचित नहीं होने देता । पशु–पक्षी भी तो खूबसूरती पर स्वयं को समर्पित करते है तथा कीट पंतगादि सुन्दरता के प्रति आशावान है ।/7

डॉ. रोज केरकेट्टा के दृष्टव्य – समाज और परिवार में रहकर माता–पिता, भाई–बहन का संबंध बना और प्रत्येक रिश्ते के अनुसार व्यवहार के नियम और चरित्र बने । इन नियमों को चरित्र में समावेश कराने वाले को प्रतिष्ठा मिली । इन कथाओं में मनुष्य की भावनाओं के अनुरुप आचार–संहिता गठित हुए है । प्रेम के, स्नेह के, त्याग, चिंता सुरूचि, कुरूचि सब व्यक्त हुए है । /8

सौन्दर्य से संबंधित उपरोक्त विचारों के अध्ययन से एक बात तो स्पष्ट हो जाता है कि पंचपरगनिया लोकगीतों उसकी संस्कृति में सौंन्दर्य की सुन्दरता की व्युत्पति में भली–भांति डूब उतर सकते है । कारण पंचपरगनिया लोक संस्कृति उनकी लोक गीतों का वास्तविक सौंन्दर्य बोध करती है । अतः हम कह सकते है कि पंचपरगनिया साहित्य के अंग पाँच परगना के सामाजिक परिवेश में उनके सांस्कृति के सौंदर्य का बोध कराती है ।

डॉ. दिनशे प्रसाद सिंह ने पंचपरगनिया लोकगीतों को तीन श्रेणियो में बांटा है ।

(अ) पंचपरगनिया संस्कार गीतों में सौंन्दर्य बोध

(आ) पंचपरगनिया पर्व–त्योहार गीतों में सौन्दर्य बोध

(इ) पंचपरगनिया विविध गीतों में सौन्दर्य बोध /9

पंचपरगनिया लोक साहित्य संस्कार गीत मात्र विवाह गीतों में इसके सुंदर चित्रण हमे देखने को मिलते है । जो कि पंचपरगनिया सांस्कृति के सौंदय का बोध कराती है ।

डॉ. दिनेश प्रसाद सिंह ने विवाह संस्कार के गीतों को तीन भागों में बांटा है । कन्या पक्ष, वर पक्ष और सामान्य गीत ।

कन्या पक्ष में गाये जाने वाले विवाह गीतों में –

(क) लगन के गीत

(ख) हल्दी चढ़ाने के गीत

(ग) मण्डपाच्छादन के गीत

(घ) बारात परिछन के गीत

(ङ.) गहना चढ़ाने के गीत

(च) विदाइ गीत

(छ) साथ छोड़ने के गीत/10

वर पक्ष में गाये जाने वाले विवाह गीतों में –

(क) लगन के समय गाये जाने वाले गीत

(ख) मण्डपाच्छादन के समय गाए जाने वाले गीत

(ग) बड़ी पाड़ने के समय गाए जाने वाले गीत

(घ) आम विवाह के समय गाए जाने वाले गीत

(ड.) बारात प्रस्थान के गीत

(च) वर–वधु के परीछन गीत

(छ) लोटा छिपाने के समय गाए जाने वाले गीत

संदर्भ ग्रंथ –

1. डॉ. श्याम प्रमार – भारतीय लोक साहित्य पृ.सं. –53
2. डॉ. दिनेश्वर प्रसाद : लोक साहित्य और संस्कृति पृ.सं. –93
3. डॉ. भुवनेश्वर अनुज : नागपुरी लोक साहित्य पृ.सं. –29
4. गौर शंकर भट्ट , भारतीय संस्कृति : एक समाज शास्त्रीय समीक्षा प्रका– साहित्य सदन देहरादून –1965 पृ.सं. –11,12
5. डॉ.शान्ति खलखों उ.सं. : प. एवं दि. प्र.कु. वि. समिति राँची –2008 पृ.सं. –198, 201
6. डॉ. पूर्णचन्द्र सिंह मुण्डा – पंचपरगनिया लोक साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन पृ. सं– 149
7. डॉ. एस.टी नरसिंहाचारी : सौन्दर्य तत्व निरूपण पृ. सं. –97
8. डॉ. रोज केरकेट्टा : खड़िया लोककथाओं का साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन पृ. सं. –176
9. डॉ. दिनेश प्रसाद सिंह : पंचपरगनिया लोकगीतों में सौन्दर्य बोध पृ.सं. –61
10. वही पृ.सं. –62
11. वही पृ. सं. –74

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RSEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM